८ शर्विलक

मृच्छकटिक प्रकरण में दो प्रेमकहानियाँ है, जिसमें एक प्रमुख कथा चारुदत्त और वसन्तसेना की है तो दूसरी प्रेम कथा शर्विलक और मदनिका की है। शर्विलक एक महत्त्वपूर्ण पात्र है। शर्विलक किसी अप्रतिग्रही चतुर्वेदी ब्राह्मणकुल का एक उत्साही युवा है। ~~शर्विलक~~ मृच्छकटिक सामाजिक दशा और समाज में रहने वाले प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को चित्रित करता है। इसी कारण कवि शूद्रक ने शर्विलक के रूप में एक ऐसे पात्र का सृजन किया है जिसका चरित्र सबलता और दुर्बलता का सम्मिश्रण है। सज्जनता दुर्जनता का एक अद्भुत संयोग के रूप में शर्विलक का चरित्र देखा जा सकता है। हम निम्नलिखित बिन्दुओं से उसके चरित्र का आंकलन कर सकते हैं।

① प्रेमी → शर्विलक एक प्रेमी है, जो अपनी प्रिया को पाने के लिए चोरी जैसा घृणित कर्म भी बड़ी प्रसन्नता के साथ करता है। ~~वह~~ वह जानता है कि चोरी घृणित कर्म है पुनरपि स्नेहवश है अतः यह कार्य भी करता है। जैसे शर्विलक मदनिका से कहता है —

त्वत्स्नेहबद्धहृदयो हि करोम्यकार्यं,
सद्वृत्तपूर्वपुरुषेऽपि कुले प्रसूतः।
रक्षामि मन्मथविपन्नगुणोऽपि मानं,
मित्रञ्च मां व्यपदिशस्यपरञ्च यासि ॥

दारिद्र्येणाभिभूतेन त्वत्स्नेहानुगतेन च।
अद्य रात्रौ मया भीरु! त्वदर्थे साहसं कृतम् ॥

② धर्मधारक → चोरी जैसे निन्दित कार्य में वह धर्म अधर्म का ध्यान रखता है। शर्विलक मदनिका से →

नो मुष्णाम्यबलां विभूषणवतीं फुल्लामिवाहं लतां,
विप्रस्वं न हरामि काञ्चनमथो यज्ञार्थमभ्युद्धृतम्।

(5)

चोर → शर्विलक स्वभाव से चोर नहीं है किन्तु मजबूरी में चोरी करता है और इस काम को भले ही लोक घृणित समझते हैं किन्तु शर्विलक की दृष्टि में चोरी एक कला है और विशिष्ट गुण जो उसने योगाचार्य से सीखी है। अतः वह हाथ जोड़े नौकरी करने की अपेक्षा चोरी करने में सम्मान समझता है —

काम नीचमिदं वदन्तु पुरुषाः स्वप्ने च यद्वर्धते,
विश्वस्तेषु च वञ्चनापरिभवश्चौर्यं न शौर्यं हि तत् ।
स्वाधीना वचनीयतापि हि वरं बद्धो न सेवाञ्जलिः
मार्गो ह्येष नरेन्द्रसौप्तिकवधे पूर्वं कृतो द्रौणिना ॥

विचारवान → शर्विलक हर काम विचार करके करता है। वह सेंध लगाने में भी विचार करता है कि कहाँ कैसी सेंध लगानी है वह इस विद्या में निपुण है। वह कहता है → (पक्वेष्टकानामाकर्षणम्, आमेष्टकानां छेदनम्, पिण्डमयानां सेचनम्, काष्ठमयानां पाटनमिति)

प्रत्युत्पन्नमति → शर्विलक सेंध लगाने के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला मापक सूत्र भूल जाता है तो वह यज्ञोपवीत को ही मापक सूत्र के रूप में प्रयोग करता है। ~~वह~~ ब्राह्मण के लिए यज्ञोपवीत को बहुत उपयोगी बताता है।

(यज्ञोपवीतं हि नाम ब्राह्मणस्य महदुपकरणं द्रव्यम्)
एतेन मापयति भित्तिषु कर्ममार्गमेतेन —— ।

(6) सच्चा मित्र →

द्वयमिदमतीव लोके प्रियं नराणां सुहृच्च वनिता च।
सम्प्रति तु सुन्दरीणां शतादपि सुहृद्विशिष्टतमः ॥

(7) कूटनीतिज्ञ →
अपने मित्र आर्यक को कारामुक्त कराके चालक को इकट्ठे होकर आर्यक को अभिषिक्त कर अन्त में राजवल्लभ के रूप में ... ...

Scanned with CamScanner